शूम्पीटर का नवप्रवर्तन सिद्धान्त
(The Innovation theory).

प्रोफेसर शूम्पीटर के अनुसार नवप्रवर्तन के परिणामस्वरूप होने वाले गत्यात्मक परिवर्तन से लाभ उत्पन्न होते है। शुरू में वह एक पूंजीपति बन्द अर्थव्यवस्था को लेता है जो स्थैतिक में हो। एक "वृत्तीय प्रवाह" (Circular flow), जो निर्देश के लिए अपनी पुनरावृत्ति करता रहता है इस संतुलन को विशिष्टता प्रदान करता है। ऐसी स्थैतिक अवस्था में पूर्ण प्रतियोगितात्मक संतुलन होता है। उसमें प्रत्येक वस्तु की कीमत उसके उत्पादन की लागत के ठीक बराबर होती है और कोई असामान्य लाभ नहीं होता है। केवल बाह्यजात कारण, जैसे मौसम की स्थितियाँ, इस वृत्तीय प्रवाह में परिवर्तन ला सकती है परन्तु वह भी अस्थायी रूप से और अर्थव्यवस्था फिर वृत्तीय प्रवाह की स्थिति में आ जाती है। वृत्तीय प्रवाह की स्थिति में वस्तुओं का उत्पादन एक स्थिर दर पर होता है। इस नित्य होने वाले कार्य को वैज्ञानिक

प्रबन्धक करते है। एक उद्यमी ही नवप्रवर्तन के द्वारा इस चक्रीय प्रवाह के मार्गों में जाकर पैदा करता है। इस प्रकार शुम्पीटर के मतानुसार नवप्रवर्तक पूंजीपति नही बल्कि होता है। उद्यमी साधारण प्रबन्धात्मक योग्यता का व्यक्ति नही होता है बल्कि ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी एकदम नई वस्तु का प्रचलन करता है। वह निधियाँ तो प्रदान नही करता परन्तु उनके प्रयोग का निर्देश करता है। उनपने आर्थिक कार्य के लिए उसे दो चीजों की जरूरत होती है एक, नई वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए तकनीकी ज्ञान के अस्तित्व की और दूसरे उधार में उत्पादन के साधनों पर व्यवस्थाधीक्षमता।

वह बैंकों से ऋण लेता है और वर्तमान तकनीकी ज्ञान का उपयोग करने के लिए अपनी योग्यता का प्रयोग करता है। इससे नवप्रवर्तन होता है जो अर्थव्यवस्था में उत्पादन के चक्रीय प्रवाह में जाकर पैदा कर देता है और परिणामस्वरूप लाभ पैदा होते हैं।

Page No.:
Date:

इस प्रकार पूंजीपति से उद्यमी का कार्य नितान्त अलग होता है। उद्यमी केवल नवप्रवर्तन लाता है, जोखिम नहीं उठाता। जोखिम उठाना केवल पूंजीपति का काम है या फिर ऋण देनेवाले बैंकों का। यदि उद्यमी ही पूंजीपति भी हो, तो भी वह दो कार्य करता है जो अलग-अलग होते है। इसलिए उद्यमी को जोखिम के नहीं बल्कि नवप्रवर्तन के पुरस्कार के रूप में ही लाभ प्राप्त होते हैं।

To be Continued

Thank You